नवागढ़ (नंदपुर) पाषाण युग का एक सांस्कृतिक क्षेत्र

प्रो. गिरिराज कुमार, आगरा

नवागढ़ जिसको नंदपुर के नाम से भी जाना जाता है, एक प्राचीन सज़्यता का स्थल है। यह उज़रप्रदेश की तहसील जिला ललितपुर में मध्यप्रदेश एवं उज़रप्रदेश के सीमा पर $78^0.80$ देशान्तर एवं $24^0.34$ अक्षांश में स्थित है। यह मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ से 30 कि. मी. झांसी (उ.प्र.) से 130 कि. मी. तथा ललितपुर उ. प्र. से 65 कि. मी. पर अवस्थित है। बुंदेलखण्ड जो खजुराहो तथा ओरछा के मंदिरों के लिये विश्वप्रसिद्ध है, का एक हिस्सा है, जिसकी स्थापना गुप्तकालीन शासकों ने की थी।

श्री जयकुमार 'निशान्त' जो नवागढ़ के जैन मंदिर के प्रमुख कार्यकर्ता हैं, इन्होंने नवागढ़ की फाइटोन शिला के पास जैन पहाड़ी में कुछ शैलाश्रय एवं पाषाण चित्र खोजे हैं। उन्होंने कुछ मनके तथा अन्य पुरातज़्व सामग्री जो प्राचीन रहवासी प्रयोग करते थे खोजी है। उनकी बहुत तीव्र रुचि इस क्षेत्र का सांस्कृतिक, पुराताज़्विक इतिहास जानने और उसको प्रमाणित करने की है, यही कारण है कि वे चाहते हैं कि पाषाण कला एवं अन्य स्थलों का पाषाण कला विशेषज्ञों के द्वारा अवलोकन एवं अध्ययन कराया जाये। इस हेतु उन्होंने मुझे इस क्षेत्र में आमंत्रित किया। उनके आमंत्रण पर मैं तथा डॉ. अभिमन्यु जो संस्कृत व्याकरण के सहायक प्रोफेसर हैं, 28 जनवरी 2019 को क्षेत्र पर पहुँचे और आसपास के स्थान एवं क्षेत्र का अवलोकन अन्वेषण किया।

यहाँ पर पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' के द्वारा खोजा गया दसवीं शताज़्दी का एक जैन मंदिर है। जिसका जीर्णोद्धार समिति के द्वारा स्थानीय लोगों की सहायता से ब्रह्मचारी जयकुमार 'निशांत' जो पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' के पुत्र हैं, के कुशल निर्देशन में किया गया। वर्तमान में यह सुन्दर मंदिर जीवन्त कृति है और लोगों के द्वारा पूजित-अर्चित है।

नवागढ़ ग्रेनाइट संरचित क्षेत्र है। यहाँ पहाड़ी के ऊपर प्राचीन रहवासियों के साधन के कुछ अवशेष प्राप्त होते हैं, पहाड़ी गाँव के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। यहाँ

से कुछ बर्तनों के अवशेष तथा प्राचीन दुर्लभ सामान यथा मिट्टी तथा पाषाण के मनके, धातु उपकरण आदि प्राप्त हुये हैं।

मंदिर के पश्चिम में 1.5 किमी. की दूरी पर एक ग्रेनाईट की पहाड़ी है जिसको सिद्धों की टोरिया कहा जाता है। यहाँ पर ग्रेनाइट की एक विशाल चट्टान है जो ऊपर से नीचे तक दो भागों में दरार के द्वारा विभाजित है। यह चट्टान लगभग 8.6×6×3.5 मीटर लज़्बी, चौड़ी, ऊँची है। उस पर एक कप मार्क बना है जो लगभग वृज़ाकार है। इस चट्टान के क्वार्ट्स क्रिस्टल की संरचना 1.2-0.4 मि.मी. तक है। चट्टान पर एक पैट्रोलिक कप मार्क के रूप में बना है, जिसका माप 60×69×86 मिली मीटर है। क्षरण के कारण यह जानना संभव नहीं हो पाया कि किस तकनीक से इसका निर्माण किया गया था। यह प्रत्यक्ष दबाब (ठोककर) तकनीक के द्वारा या धातु की छैनी का प्रयोग कर बनाया गया। यह सुनिश्चित नहीं हो पाया है। फिर भी इसकी सतह को देखकर लगता है कि इसमें गतिज ऊर्जा का स्थानान्तरण हुआ था, जिसका वर्तमान में कुछ अवशेष मात्र है। बाकी क्षरण के कारण समाप्त हो गया हैं, यह एक मात्र कप मार्क है। जिसे हम लोगों ने इस क्षेत्र में खोजा है। लेकिन हम ऐसे और अवशेषों को आशा करते हैं अतः इस क्षेत्र पर गहन खोज होनी चाहिये। जिससे ऐसे अनेक अवशेष प्राप्त हो सकें।

पाषाण चित्र – एक अन्य पहाड़ी है जिसे फाइटोन हिल्स कहा जाता है। यहाँ पाँच चट्टानें (फाइव स्टोन) अवस्थित है। संभवतः इसी कारण इसे फाइटोन कहा जाता है। यह स्थल नवागढ़ गाँव से पश्चिम में लगभग 3 किमी. पर स्थित है। यहाँ पर एक पाषाण गुफा (राक शैल्टर) में कुछ पाषाण चित्र एक बड़ी ग्रेनाइट चट्टान पर मिले हैं। गुफा 3.3 मी. लज़्बी, 3 मीटर गहरी एवं 1.55 मीटर ऊँची है। इसमें स्पष्ट रूप से दिखने वाले कुछ जानवरों के चित्र एवं ज्यामितिक आकृतियाँ बनी हैं, जो पूर्व पाषाण (माइक्रोलिथिक/मैसोलिथिक) काल के जंगली पशु 6 से 10 हजार वर्ष प्राचीन हैं । इनका संरक्षण आवश्यक है। एक व्यक्ति ने अपना नाम वीर गुर्जर गहरे और मोटे अक्षरों से सफेद खड़िया से लिखा है।

संरचना संज़्या – 1

इसमें एक जंगली पशु जो बाइसन (जंगली भैसा/जंगली बैल) जैसा दिखता

है। दाहिने तरफ तीन ज्यामितिक आकृतियाँ बनी हैं जो इसके सामने हैं तथा एक के ऊपर एक हैं। बाइसन 16.5 ×17 सेमी. नाप का है तथा इसका शरीर खड़ी बहु रेखाओं द्वारा सज्जित है इसके सींग पूर्ण विकसित एवं मुड़े हुए हैं। इसके सामने एक ज्यामितिक रचना है जो कम तिरछी रेखाओं द्वारा भरी हुई है। इसके बाद दो आयताकार खंड हैं। इस रचना का नाप 50×44 सेमी. है जो एक शैल्टर की दाहिनी दीवाल पर बना हुआ है। वे चित्र लाल रंग से महीन ब्रश के द्वारा बनाये गये हैं। इसके ऊपर गेरुआ रंग से मोटे ब्रश द्वारा जो एक रेखा के अवशेष हैं। इसके बगल में गहरे लाल रंग से बने तीन चिह्न हैं, शायद बाद में बनाये गये हैं। एक वर्गाकार चित्र बना है। चट्टान की सतह उखड़ने के कारण इस चित्र का कुछ दाहिना हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया है।

यह चित्र लवण की सफेद परत से ढँक रहा है। इसके अलावा लाल रंग से बना एक जानवर का रेखाचित्र है, क्षरण के कारण इसका रंग हल्का पड़ गया है। यह महीन ब्रश से बना है। इन रचनाओं से यह स्पष्ट झलकता है कि ये चित्र तीन चरणों में बनाये गये हैं। जिनमें से दो जानवरों की पूर्वकालिक पाषाण युग की तथा तीसरी बाद के काल की है।

संरचना संज़्या 2

शेल्टर की दीवाल के बायें तरफ7 टेड़ी-मेड़ी रेखायें हैं जो कि मध्यम चौडाई के ब्रश द्वारा लाल रंग से एक के ऊपर एक बनाई गई है। यह रचना 20×17 से. मी. की है । इसके अतिरिक्त दो ज्यामितिक आकृतियाँ महीन ब्रश से लाल रंग से बनाई गई हैं। बायें तरफ की आकृति जो 11 ×10 सेमी. है लगभग वृज़ाकार है और एक केन्द्र वाले दो वृज़ों के बीच के स्थान का सीधी रेखाओं द्वारा सुसज्जित किया गया है। बायी ओर की 16 ×12 सेमी. की आकृति को आड़ी रेखाओं द्वारा दो भागों में बाँटा गया है, नीचे का हिस्सा अपेक्षाकृत बड़ा है और वह 6 अर्ध चन्द्राकार वाली मुड़ी रेखाओं द्वारा सज्जित किया गया है। ऊपरी हिस्सा 9 रेखाओं द्वारा असमान भाग में विभाजित है। यह आकृतियाँ मोटे सफेद रंग की परत से आवरित है। इसके सिवा रॉक शेल्टर की छत पर गहरे लाल रंग की पूर्व आकृतियों की अवशेष हैं।

जैन साधु की पाषाणाकृति

पाषाण की एक संकरी गुफा में दीवाल पर जैन साधु की आकृति उकेरी हुई है। इस गुफा में हम घुटनों के बल चलकर अंदर पहुँचे। संभवतः यह स्थान जैन साधुओं के द्वारा ध्यान और प्रार्थना के लिये उपयोग में आता होगा यहाँ उनके निर्देशन में किसी ने यह चित्र उकेर दिया होगा। यह 50 सेमी. ऊँचा और 25 सेमी. चौड़ा है, इसके दाहिने हाथ में कोई वस्तु है जो स्पष्ट नहीं दिखती थी।

पाषाण की कुल्हाड़ी

लगभग 500 मीटर गाँव के पश्चिम में स्थित पहाड़ी की ढलान पर चर्ट पर बनीं एक छोटी हेण्डएज़्स मिली है। यह अच्छी तरह निर्मित है और इसका बेट 120 डिग्री पर बना है जिसका कुछ हिस्सा उखड़ गया है, सिरा टूट गया है किनारे टेड़े-मेड़े हो गये हैं ज़्योंकि आगे-पीछे दोनों तरफ की 5-5 पर्ते उखड़ गई हैं। किनारों की रिटचिंग दोनों तरफ से की गई है। इसका रंग हल्का पीला है।

द्वितीय अन्वेषण

दिनांक 27-28 मार्च 2018 को नवागढ़ आकर मैंने पूरे क्षेत्र का विधिवत् निरीक्षण किया। यहाँ मुंडी टौरिया, बगाज टौरिया, पनया नाला के आसपास निरीक्षण करने पर छोटी हैन्डेज़्स 53.8 ×39 ×15 मि.मी. पेटीनेटिड चर्ट 38.3 ×26.0 ×10 मि.मी. की तिकोनी आकृति एवं 31.5 ×23.0 ×6.4 मि.मी. की फलैक आन चर्ट का अन्वेषण किया।

तृतीय अन्वेषण

5 से 7 जुलाई 2018 को नवागढ़ में मुंडी टौरिया, नवागढ़ से 3 किमी. मैनवार टौरिया तथा नवागढ़ से 7 किमी. सपौन टौरिया का निरीक्षण किया। जिसमें मुंडी टौरिया के दक्षिणी भाग में ग्राम वासियों द्वारा उसकी मिट्टी (गुरम) खोदने से लगभग 7 फुट गहराई का स्थान मिला, जिसमें लोवर पेलियोलिथिक (2 से 5 लाख वर्ष) एवं मिडिल पेलियोलिथिक (35 हजार से 2 लाख वर्ष) के कई पाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं। जिनकी आकृति 61 ×73.8 ×46.85 मिमी., 70 ×67 ×26.6 मिमी. है।

सापौन टौरिया, जो माननीया उमाभारती जी के निवास ग्राम डूंडा से 4 कि.मी. एवं अजनौर से 4 कि.मी. दूर रोड पर स्थित है। यहाँ क्वार्टज की 200 मीटर लज़्बी 50 मीटर ऊँची पहाड़ी है जिसमें क्वार्टज के कई उपकरण प्राप्त हुए जिनकी आकृति 87 ×81.7 ×45 मिमी. 70.6 ×55 ×25 मि.मी. एवं 130.5 ×61 ×39 मि.मी. है। इसी प्रकार मैनवार हिल्स से भी कई उपकरण प्राप्त हुए हैं।

निष्कर्ष-

इस प्रकार नवागढ़ क्षेत्र की प्रागैतिहासिक विरासत के साक्ष्य लोअर पेलियोलिथिक (2 से 5 लाख वर्ष) से अपर पेलियोलिथिक तक के पाषाण प्राप्त हुए हैं, नवागढ़ की एक और विशेषता है कि यहाँ पाषाण काल के साक्ष्यों के साथ कपमार्क, रॉक पेंटिग्स, रॉक कट इमेज भी मिले हैं।

हजारों वर्ष प्राचीन शैलाश्रयों में जैन संतों के साधना स्थल एवं शयनस्थल यह सिद्ध करते हैं कि नवागढ़ की पहाड़ियों में जैन संतों का आवागमन हजारों वर्षों से निरंतर हो रहा है। यहाँ से प्राप्त मिट्टी एवं पाषाण के मनके यहाँ विकसित मानव संस्कृति के साक्ष्य हैं। कला शिल्पानुसार यहाँ गुप्तकाल, प्रतिहार काल, चन्देल काल से वर्तमान काल तक के प्रमाण स्पष्ट रूपेण संगृहीत हैं। यहाँ की पुरातात्ज़्विक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक विरासत विशिष्ट एवं विलक्षण हैं। इनका संरक्षण अतिशीघ्र होना चाहिए, अन्यथा इनका मात्र इतिहास में ही नाम रहेगा।

गुरुकुल परज़्परा का संवाहक- नवागढ़ (नंदपुर)

- डॉ. श्रेयांस कुमार जैन

भारतीय संस्कृति गुरु-शिष्य परज़्परा की पोषक है अर्थात् पुरातनकाल से ही गुरुकुलों में गुरु अपने शिष्यों को उनकी योग्यतानुसार संस्कारारोपण करके उनके व्यक्तित्व का परिमार्जन करते थे। इतिहास इसका साक्षी है।[1] राजकीय भोगविलास से परे प्राकृतिक सुरज़्य उपवन में स्थित आश्रमों में राजपुत्र से लेकर सामान्य विद्यार्थी तक विद्याध्ययन करते थे।[2] गुरुकुल के शिष्यों में ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं होता था। सामान्यतः दैनिक कार्य स्वयं ही सज़्पादित करने के साथ-साथ जंगल से लकड़ी लाना, रसोई तैयार करना, सफाई करना, बागवानी, गुरुओं के समस्त कार्य में सहयोग करना सभी की दिनचर्या का अंग होता था।

अनवद्या हि विद्या स्याल्लोकद्वयफलावहा।[3]

निर्दोष, अच्छी तरह से परिश्रम पूर्वक अज़्यस्त विद्या ही ऐहिक और पारलौकिक कार्यों को सफल करती है अर्थात् जिस शिक्षा से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास होता है वही यथार्थ से अनवद्य शिक्षा है। (क्षत्रचूड़ामणि 3/45 आ. वादीभ सिंह सूरि)

नंदपुर वर्तमान नवागढ़[4] जिला ललितपुर (उ.प्र.) में संगृहीत कलात्मक शिल्पों का पुरातज़्ववेज़ाओं द्वारा सूक्ष्म अध्ययन से ऐसे तथ्य सामने आये हैं, जो इसे विशाल गुरुकुल या शिक्षा केन्द्र के रूप में स्थापित करते हैं।

बगाज की टौरिया पर स्थित विशेष द्विभागीय गुफा का 11 जून 2016 में उद्घाटन करते समय चंवरधारिणी इंद्राणी, अंबिका एवं साबु पाहल अंकित शिलाखण्ड प्राप्त हुए।[5] दोनों भागों का नैसर्गिक आकार विलक्षण है। द्विभागीय गुफा का फर्श 25×20 फुट है, जो गुफा के भीतर से बाहर तक एक ही पाषाण खण्ड से निर्मित है, परन्तु विशेषता यह है कि भीतरी भाग बाहरी भाग से स्वभाविक रूप से ऊँचा है अर्थात् बहिर्भाग की अपेक्षा दोनों गुफा का भीतरी भाग क्रमशः ऊँचा-नीचा है। जहाँ वरिष्ठ आचार्य एवं उपाध्याय गुफा के भीतर बैठकर बाहर बैठे शिष्यों को विद्याध्ययन कराते हों।